VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS
+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS
(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(भारत का ताना-बाना)

(May 2024)

(Part II)

TOPICS TO BE COVERED

- भारत की बुनाई: सहकार्यता और अंतर-सांस्कृतिक प्रभाव
- भारत के हथकरघा उत्पाद: लोकल टू ग्लोबल

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत की बुनाई: सहकार्यता और अंतर-सांस्कृतिक प्रभाव

भारतीय बुनाई कला की सृजनात्मकता:

- मिथकों और किंवदंतियों वाली भारत की प्राचीन भूमि में एक कहानी काफी प्रचलित है, वह थी देवताओं, दानवों और बुनाई की रहस्यमय कला की कहानी। जिसमें देवताओं के दिव्य लोक में अद्वितीय बुनाई कौशल और सृजनात्मकता के धनी विश्वकर्मा के कौशल ने एक प्रतियोगिता में शक्तिशाली दानव वृत्र के को परास्त कर अराजकता फैलने से पृथ्वी को बचाया था।

- भारत में बुनाई की कला एक पवित्र उपहार बनी हुई है जो सच्चे हृदय और दैवीय रूप से निर्देशित हाथों वाले लोगों को सौंपी गई है।
- अपनी पौराणिक उत्पत्ति से परे, बुनाई भारतीय समुदायों के सामाजिक और महत्वपूर्ण रूप से आर्थिक ताने-बाने में गहराई से अंतर्निहित है। सदियों से, इसने अनगिनत कारीगरों और उनके परिवारों को आजीविका प्रदान की है, इस प्रकार यह कौशल जीविका और आर्थिक सशक्तिकरण के संसाधन के रूप में काम कर रहा है।

भारत में बुनाई की समृद्ध परंपरा की ऐतिहासिक जड़े:

- बुनाई की समृद्ध परंपरा सहस्राब्दियों पुरानी है। ऐतिहासिक रूप से, भारत में बुनाई का पता प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1300 ईसा पूर्व) से लगाया जा सकता है जहाँ कपास की खेती और कपड़ा उत्पादन के साक्ष्य मिले हैं। टेराकोटा की मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन और मुहरें जैसी पुरातात्विक खोजें जटिल बुने हुए कपड़ों में लिपटे व्यक्तियों को दर्शाती हैं, जो बुनाई तकनीक और कपड़ा शिल्प कौशल की गहरी समझ का संकेत देती हैं।
- ऋग्वेद बुनाई के महत्व को और अधिक मजबूत करता है। ऋग्वेद में बुनाई न केवल एक व्यावहारिक आवश्यकता थी, बल्कि इसका धार्मिक और रस्मी महत्व भी था।
- संरक्षण की यह परंपरा पूरे इतिहास में जारी रही है। मुगल साम्राज्य (1526-1857) ने भारतीय बुनाई का और अधिक विस्तार किया, विशेष रूप से ब्रोकेड, मलमल और मखमल जैसे शानदार वस्त्रों के विकास में।
- यूरोपीय प्रभाव ने भी इस अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 15वीं शताब्दी में यूरोपियों के आगमन से भारतीय वस्त्रों, विशेष रूप से

सूती और रेशमी कपड़ों की मांग ने कपड़ा विनिर्माण केंद्रों के विस्तार को बढ़ावा दिया और यूरोपीय व्यापार नेटवर्क की स्थापना की।

- इसके अलावा, औपनिवेशिक काल के दौरान मशीनीकृत करघों और सिंथेटिक रंगों की शुरुआत ने उत्पादन विधियों में और क्रांति ला दी, जिससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

बुनाई कला समाज की सृजनात्मक तथा सांस्कृतिक संचरण का प्रतीक:

- बुनाई कला, अपनी समृद्ध विरासत को आगे बढ़ाते हुए भारत की स्थायी सृजनात्मक भावना तथा सांस्कृतिक संचरण का एक शक्तिशाली प्रतीक बन गई है। यह स्वयं को महज शिल्प कौशल में आगे बढ़ाकर एक जीवंत सामाजिक और सांस्कृतिक आधारशिला के रूप में विकसित करती है। बुनाई की कला समाज के हर वर्ग के भारतीयों के दैनिक जीवन, विश्वासों, रीति-रिवाजों और परंपराओं से जुड़ी हुई है।
- शुभ समारोहों के दौरान महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली आकर्षक साड़ियों से लेकर किसानों द्वारा पहने जाने वाले साधारण कपड़ों तक, बुनाई एक एकीकृत धागे के

रूप में कार्य करती है, जो विविध भारतीय सांस्कृतिक मान्यताओं की परतों को एक साथ बांधता है।

भारत में बुनाई की कुछ अद्भुत उदाहरण:

- देश भर में बुनाई को अलग-अलग शैली और तकनीकें उभरती है, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान को दर्शाती है। कुछ की सूची नीचे दी गई है:
- **बनारसी रेशम** - बनारसी रेशम की बुनाई, अपनी भव्यता, सुंदरता और जटिल पैटर्न के लिए जानी जाती है जो भारतीय संस्कृति में 'श्रृंगार' (अलंकरण) की अवधारणा की प्रतीक है। मुगल कला और धातु के धागों के उपयोग से प्रेरित रूपांकनों में सुंदरता और अलंकरण पर जोर दिया गया है।
- **कांचीपुरम रेशम-** कांचीपुरम रेशम बुनाई 'धर्म' की दार्शनिक अवधारणा से ओत-प्रोत है, जो धार्मिकता, कर्तव्य और सदाचार का प्रतिनिधित्व करती है। अपनी समृद्ध बनावट, जीवंत रंगों और सोने या चांदी के धागों से बुने गए विशिष्ट जरी बार्डर के लिए प्रसिद्ध, कांचीपुरम रेशम साड़ियां सूक्ष्म शिल्प कौशल का प्रमाण हैं।
- **पैठणी-** पैठणी बुनाई 'लक्ष्य' की अवधारणा का प्रतीक है, जो आकांक्षा, लक्ष्य-निर्धारण और आध्यात्मिक उत्थान को दर्शाता है। अपनी जटिल बुनाई, जीवंत रंगों

तथा मोर रूपांकनों के लिए पुरस्कृत, पैठणी साड़ियों को विलासिता का प्रतीक माना जाता है। पारंपरिक रूप से सोने या चांदी के धागों के साथ शुद्ध रेशम से तैयार इन साड़ियों में डिजाइन को कढ़ाई या छपाई करने के बजाय सीधे कपड़े में बुना जाता है।

- **गुजरात का पटोला शिल्प-** गुजरात का पटोला शिल्प, विशेष रूप से पटोला साड़ियां 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा का ज्वलंत उदाहरण है। पटोला साड़ियां गुजरात की सांस्कृतिक विविधता और सांप्रदायिक सद्भाव का प्रचार करती हैं, जो मतभेदों के बीच मानवता की एकता को दर्शाती हैं।

पारंपरिक बुनकरों और समकालीन डिजाइनरों के बीच बढ़ता सहयोग:

- जैसे-जैसे भारत की बुनाई परंपराएं आधुनिकता की धाराओं में आगे बढ़ती हैं, उनके संरक्षण और विकास में नई रुचि उनकी निरंतर जीवंतता सुनिश्चित करने का वादा करती है। हाल के वर्षों में पारंपरिक बुनकरों और समकालीन डिजाइनरों के बीच बढ़ते सहयोग ने भारतीय वस्त्रों और बुनाई समुदाय के परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से नया आकार दिया है।
- पूरे भारत में पारंपरिक बुनाई समुदायों ने, बदलती बाजार मांगों, घटती कारीगर आबादी और बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा के लिए खुद को ढालने के

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

लिए लंबे समय से संघर्ष किया है। समकालीन डिजाइनरों के साथ सहकार्यता ने इन कारीगरों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने, अपनी शिल्प विरासत को संरक्षित करने और स्थायी आजीविका सुरक्षित करने के लिए एक बहुत जरूरी मंच प्रदान किया है।

- इस प्रकार का सहयोग पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक डिजाइनों के साथ जोड़कर, पारंपरिक वस्त्रों को समकालीन उपभोक्ताओं के लिए प्रासंगिक बनाने में मदद करता है, जिससे उनका निरंतर अस्तित्व और विकास सुनिश्चित होता है।
- इस पुनःस्थापन आंदोलन का नेतृत्व सब्यसाची मुखर्जी, अनिता डोंगरे, राहुल मिश्रा, हिमांशु शनि और अनीथ अरोड़ा जैसे प्रसिद्ध डिजाइनर कर रहे हैं। वे अपने कार्यों के माध्यम से भारत की कपड़ा विरासत के प्रति गहरा सम्मान और इसके संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

पारंपरिकता और आधुनिकता के मिश्रण की सफलता:

- पारंपरिक और आधुनिक तत्वों के मिश्रण से अद्वितीय और नवोन्मेषी कपड़ा निर्माण होता है जो वैश्विक अपील रखता है।
- ये सहयोग पारंपरिक समुदायों को कई तरीकों से सशक्त बनाते हैं। कारीगरों को नए बाजारों, डिजाइन विशेषज्ञता और व्यावसायिक अवसरों तक पहुंच प्राप्त होती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

समकालीन सौंदर्यशास्त्र से ओत-प्रोत भारतीय वस्त्र अंतरराष्ट्रीय फैशन रनवे की शोभा बढ़ाते हैं और देश की सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि और विविधता का प्रदर्शन करते हैं।

- इसके अलावा, नैतिक प्रथाएं और संधारणीयता प्रमुख विचार हैं। कई डिजाइनर यह सुनिश्चित करते हुए कि कारीगरों को उचित वेतन मिले और वे नैतिक परिस्थितियों में काम करें, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को प्राथमिकता देते हैं।
- अपने नेटवर्क और प्लेटफार्मों का लाभ उठाकर, डिजाइनर इन समुदायों के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक बाजारों के दरवाजे खोलते हैं। इससे न केवल बिक्री बढ़ती है बल्कि बुनकर समुदायों के लिए आर्थिक स्थिरता और विकास के अवसरों को भी बढ़ावा मिलता है।
- ये सहयोग भारतीय वस्त्रों की शाश्वत सुंदरता और शिल्प कौशल को विकसित करते हैं और इस क्षेत्र को पनपने में सहायता करते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए देश की समृद्ध बुनाई परंपराओं की स्थिरता सुनिश्चित होती है।

भारत के हथकरघा उत्पाद: लोकल टू ग्लोबल

परिचय:

- हथकरघा क्षेत्र, भारत में हाथ से बुने हुए उत्पादों के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। हथकरघा उत्पाद भारत की संस्कृति और सभ्यता को प्रदर्शित करते हुए आदर्श कारीगरी का जीवंत प्रमाण हैं। जैसे पश्मीना (कश्मीर), फुलकारी (पंजाब), चिकनकारी (उत्तर प्रदेश), मूंगा सिल्क (असम), नागा शॉल (नागालैंड), पोचमपल्ली इकत (तेलंगाना), कांचीपुरम साड़ी (तमिलनाडु), मैसूर सिल्क (कर्नाटक), बांधनी (गुजरात), पैठणी (महाराष्ट्र) आदि।

भारत में हथकरघा क्षेत्र का आर्थिक महत्व:

- भारत में हथकरघा क्षेत्र कृषि के बाद 30 लाख से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करने वाले असंगठित क्षेत्र के रूप में दूसरे नंबर पर है। यह लगभग 24 लाख करघों के साथ देश का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग भी है।

- यद्यपि भारतीय हथकरघा उत्पाद छोटे शहरों और गांवों में उत्पादित होते हैं, लेकिन उन्हें विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है।
- इन उत्पादों के निर्माता, भारत के बुनकर, अपने हाथ से कताई और बुनाई कौशल के लिए विश्व स्तर पर भी पहचाने जाते हैं। यह वैश्विक पहचान भारत के हाथ से बुने हुए विभिन्न उत्पादों के लिए बड़े निर्यात बाजार बनाने में मदद करती है।

भारतीय हथकरघा का अंतरराष्ट्रीयकरण:

- हथकरघा उत्पादों को विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा वर्गीकरण के हार्मोनाइज्ड सिस्टम (एचएस) के तहत विशिष्ट कोड दिए गए हैं।
- भारतीय हथकरघा उत्पादों का निर्यात 2016-17 से 2019-20 तक प्रत्येक वर्ष 300 मिलियन डॉलर से अधिक था। वर्ष 2020-21 में कोविड-19 के तुरंत बाद निर्यात में 30 प्रतिशत की गिरावट आई। हालांकि 2021-22 में कुछ सुधार देखा जा सकता है, लेकिन वे अभी भी पूर्व-कोविड स्तर तक नहीं पहुंच पाए हैं।
- भारतीय हथकरघा उत्पादों की विश्व के 20 से अधिक देशों, मुख्य रूप से विकसित देशों और मध्य पूर्व में काफी मांग है। इन देशों में, अमेरिका एक प्रमुख बाजार है।
- भारत के हथकरघा निर्यात में प्रमुख वस्तुओं में चटाई और मैटिंग, कालीन, गलीचा, बेडशीट, कुशन कवर और अन्य हथकरघा वस्तुएं शामिल हैं। जबकि घरेलू

सजावटी उत्पादों, जिनमें लिनन बेड, पर्दे, टेबल और किचन लिनन, कुशन कवर आदि शामिल हैं और यह भारतीय हथकरघा उत्पादों के निर्यात में 60 प्रतिशत से अधिक का योगदान करते हैं, मैट और मैटिंग ऐसे निर्यात का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा हैं।

- इनमें से अधिकांश उत्पाद चार प्रमुख शहरों, करूर, पानीपत, वाराणसी और कन्नूर से निर्यात किए जाते हैं।

हथकरघा उत्पादों की ब्रांडिंग 'इंडिया हैंडलूम' ट्रेडमार्क:

- 'हैंडलूम मार्क' के आने से ग्राहकों को यह आश्वासन मिला कि संबंधित हथकरघा उत्पाद प्रामाणिक है। चूंकि प्रामाणिकता के अलावा उत्पाद की गुणवत्ता भी ग्राहकों के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है, 'इंडिया हैंडलूम' ने हथकरघा उत्पादों की एक ब्रांडिंग प्रदान की है जो 'जीरो इफ़ेक्ट जीरो डिफेक्ट' के साथ उच्च गुणवत्ता वाले हैं।
- 'इंडियन हैंडलूम' मार्क का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि निर्यातक समय पर उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े खरीदें और भारत के हाथ से बुने हुए प्रामाणिक उत्पादों के लिए एक अनूठी छवि कायम करें। इसका ट्रेड मार्क्स अधिनियम, 1999 के तहत एक ट्रेड मार्क के रूप में भी पंजीकृत किया गया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय हथकरघा उत्पादों के लिए IPR सुरक्षा:

- भारत में हथकरघा उत्पादकों के लिए बौद्धिक संपदा (IP) सुरक्षा, जिओग्राफिकल इंडिकेशन ऑफ गुड्स एक्ट, 1999 और द डिज़ाइन एक्ट, 2000 के माध्यम से प्रदान की जाती है।
- इन अधिनियमों का उद्देश्य न केवल भारत में बल्कि विदेशी बाजारों में निर्यात किए गए हथकरघा उत्पादों को IP सुरक्षा प्रदान करना भी है।

भारत में हथकरघा उत्पादों को GI टैग:

- भौगोलिक संकेतक (GI) टैग उस उत्पाद को प्रदान किया जाता है जो अपने विशिष्ट मूल स्थान से पहचाना जाता है। भारत में, कई हथकरघा उत्पादों को GI टैग प्रदान किया गया है, जिनमें 'पोचमपल्ली इकत', 'चंदेरी साड़ी', 'सोलापुर चादर', 'मैसूर सिल्क', 'कांचीपुरम सिल्क' आदि शामिल हैं।
- इन हथकरघा उत्पादों की GI स्थिति यह सुनिश्चित करती है कि उन्हें मशीनों द्वारा कॉपी और निर्मित नहीं किया गया है। यह इन उत्पादों के बुनकरों को कीमत के नुकसान से उबरने में मदद करता है क्योंकि मशीन से बने उत्पाद हाथ से बुने हुए उत्पादों की तुलना में सस्ते होते हैं।

भारतीय हथकरघा के लिए संभावित वैश्विक अवसर:

- मशीन निर्मित उत्पादों के उत्पादन में महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति के बावजूद भारतीय हथकरघा उत्पादों में नए अवसर मौजूद हैं।
- उल्लेखनीय है कि वर्तमान समय में खरीदारों और विक्रेताओं का ज्यादातर ध्यान टिकाऊ उत्पादों पर है। नई पीढ़ी स्टाइल के प्रति जागरूक है लेकिन पर्यावरण प्रेमी है और ऐसे उत्पादों को पसंद करती है जो स्टाइलिश हों लेकिन पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाएं। हथकरघा उत्पाद नई पीढ़ी की इन दोनों आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
- बढ़ते ई-कॉमर्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म की उपलब्धता हथकरघा उत्पादकों को छोटे शहरों और दूरदराज के स्थानों से भी अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचने का अवसर प्रदान करती है।

भारतीय हथकरघा के समक्ष चुनौतियां:

- इन अवसरों के बावजूद, हथकरघा उत्पादों को हाथ से बुनाई की परंपरा को जीवित रखने की महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ता है। बेहतर वेतन वाली कुशल नौकरियों की उपलब्धता में वृद्धि के साथ, पारंपरिक कारीगर अपनी नई पीढ़ी को

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

हाथ से बुनाई के पेशे में लाने के इच्छुक नहीं हैं, जो अधिक श्रम वाला और ज्यादातर कम भुगतान वाला है।

- उत्पादकों को मशीन-निर्मित कपड़ों से भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जो कम श्रम लगने के कारण अक्सर सस्ते होते हैं। प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान और अधिक गंभीर हो जाता है क्योंकि मशीन से बने उत्पाद हाथ से बुने हुए उत्पादों की प्रतिकृतियों की तरह दिखते हैं और हाथ से बुने हुए प्रामाणिक उत्पाद के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

आगे का रास्ता:

- भारत के हथकरघा उत्पाद एक ही समय में परंपरा और आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन उत्पादों के अनूठे डिजाइन, गुणवत्ता और विविधता ने पिछले कुछ वर्षों में अन्य देशों में एक विशिष्ट बाजार बनाने में मदद की है। परिणामस्वरूप, आज भारतीय हथकरघा उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय मॉडलों और मशहूर हस्तियों द्वारा समर्थन दिया जाता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत के हथकरघा उत्पाद अपनी स्थानीय विशेषताओं के साथ महत्वपूर्ण वैश्विक छाप छोड़ रहे हैं।